Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

ऋग्वैदिक सूक्तों में वर्णित परमसत्ता का व्यावहारिक स्वरूप

डॉ.गयाप्रसाद मिश्र,
सहायक अध्यापक,
मथुरिया इण्टर कॉलेज,
डिबाई, बुलन्दशहर।

Article Info

Volume 3 Issue 5

Page Number : 105-110

Publication Issue :

September-October-2020

Article History

Accepted : 15 Oct 2020

Published : 26 Oct 2020

सारांश – परमसत्ता के व्यावहारिक स्वरूपों को हृदयङ्गम करके न केवल आत्मकल्याण बल्कि सबके उत्थान और कल्याण की भावना से युक्त होकर अपना इहलौकिक जीवन जीते हुए पारलौकिक कल्याण की कामना करनी चाहिए। तभी हमारी **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** की भावना चरितार्थ हो सकती है। अन्यथा देश और समाज जिस तीव्र गति से विखण्डन की ओर बढ़ रहा है, लोगों में परस्पर द्वेष और हिंसा की भावना प्रबल हो रही है, उसे रोक पाना असम्भव होगा। वैश्विक शान्ति और सद्भाव के लिए तथा प्राकृतिक पर्यावरण को संजोए रखने के लिए ऋग्वैदिक सूक्तों में वर्णित तथ्यों को आत्मसात् करने की महती आवश्यकता है, तभी आदर्श राष्ट्र की कल्पना साकार हो सकती है।

मुख्य शब्द – ऋग्वैदिक, सूक्त, परमसत्ता, व्यावहारिक, स्वरूप, शान्ति, प्राकृतिक।

विश्व के प्राचीनतम साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित ऋग्वेद परमसत्ता के व्यावहारिक स्वरूपों का भी प्रमुखता से उल्लेख करता है। यह ऐसा महनीय ग्रन्थ है, जिसमें ज्ञान–विज्ञान सम्बन्धी सभी तत्त्वों का विकसित रूप उपलब्ध होता है। वैदिक युग की सभ्यता एवं संस्कृति का आदर्श रूप दिखाते हुए मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने तत्कालीन धार्मिक, दार्शनिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक इत्यादि सभी प्रकार के विचारों एवं उनकी प्रगति का विस्तार से विवेचन किया है। स्तुतिपरक ऋचाओं के माध्यम से वैदिक ऋषियों ने परमसत्ता के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हुए उन्हें जगत्कल्याण की भावना से परिपूर्ण बतलाया है। परमसत्ता के व्यावहारिक स्वरूपों का वर्णन ऋग्वेद के अनेक सूक्तों में मिलता है। 'अग्नि सूक्त' जो ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है, उसका मुख्य विषय अग्निदेव के व्यावहारिक स्वरूपों का वर्णन ही है। अग्नि सूक्त के प्रथम मन्त्र में अग्नि को 'यजमान की कामनाओं को पूरा करने वाला, यज्ञ का पुरोहित, दान आदि दिव्य गुणों से सम्पन्न, देवताओं के ऋत्विक् और होता एवं यज्ञ के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले श्रेष्ठ पदार्थों को धारण करने वाला' कहा गया है–

"अग्निमीले पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।"[1]

इसी प्रकार अग्नि सूक्त के नवम मन्त्र में प्रार्थना की गयी है कि 'हे अग्निदेव! जिस प्रकार पिता पुत्र के लिए सुप्राव्य और कल्याण करने वाला होता है, उसी प्रकार आप भी हमारे लिए सुप्राव्य बनें और हमारे कल्याण के लिए हमारे साथ रहें'–

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

"स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव।

सचस्वा नः स्वस्तये।।"[2]

"सवितृ सूक्त" के प्रथम मन्त्र में कहा गया है कि 'अपने कल्याण के लिए मैं सर्वप्रथम अग्निदेव का आह्वान करता हूँ, इस कार्य में रक्षा के लिए मैं मित्र और वरुण देवों का आह्वान करता हूँ, संसार के गतिशील प्राणियों को विश्राम देने वाली रात्रि का मैं आह्वान करता हूँ, अपनी रक्षा के लिए सविता देवता का आह्वान करता हूँ'–

"ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये

ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे।

ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं

ह्वयामि देवं सवितारमूतये।।"[3]

सवितृ सूक्त के आठवें मन्त्र में हिरण्यस्तूप ऋषि सविता देवता के प्रकाशपूर्ण कार्यों को बतलाते हुए कहते हैं कि सविता ने पृथ्वी की आठों दिशाओं (पूर्व आदि चार दिशाओं और आग्नेय आदि चार दिशाकोणों) को प्रकाशित किया है, अन्तरिक्ष आदि तीन लोकों को प्रकाशित किया है और गङ्गा आदि सात नदियों को अथवा सात समुद्रों को प्रकाशित किया है'–

"अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्-

त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून्।

हिरण्याक्षः सविता देव आगाद्

दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि।।"[4]

आगे सवितृ सूक्त के दशवें और ग्यारहवें मन्त्र में सविता के परोपकारी स्वरूप की चर्चा करते हुए उनसे प्रार्थना की गयी है कि 'सुवर्णमय हाथों वाला अथवा यजमानों को देने के लिए सुवर्ण को हाथों में लिए हुए, प्राणों को देने वाला, सुन्दर नेतृत्व वाला, उत्तम सुख को प्रदान करने वाला धनसम्पन्न वह सविता देव हमारी ओर आवे। राक्षसों एवं मायावियों को दूर भगाता हुआ वह देव प्रत्येक रात्रि में स्तुति किया जाता हुआ उदित होता है। हे सबके प्रेरक सविता देवता! जो तुम्हारे मार्ग पहले से निश्चित चले आये हैं, धूलि से रहित हैं और अन्तरिक्ष में अच्छी प्रकार से बनाये गये हैं, आज उन सुगम मार्गों से आकर हमारी रक्षा करो और हमें उपदेश भी प्रदान करो'–

"हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः

सुमृलीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ्।

अपसेधन् रक्षसो यातुधानान्

आस्थाद्देवः प्रदिदोषं गृणानः।।"

"ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासो

ऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे।

तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी

रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देवः।।"[5]

ऋग्वेद के 'मरुत् सूक्त' में मरुतों को रुद्र का पुत्र बताते हुए उन्हें 'उत्तम कर्म करने वाला और द्युलोक तथा पृथ्वी लोक का निर्माणकर्ता' कहा गया है।[6] उनके उपकारक स्वरूप का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि 'मरुतों ने खोदे हुए कुएँ को

गौतम ऋषि के आश्रम तक ले जाकर उनकी प्यास शान्त किया और आयु को धारण करने वाले जलों से गौतम ऋषि की इच्छा को तृप्त किया'–

"जिह्मं नुनुद्रेऽवतं तया दिशा

सिञ्चन्नुत्सं गोतमाय तृष्णजे।

आ गच्छन्तीमवसा चित्रभानवः

कामं विप्रस्य तर्पयन्त धामभिः।।"[7]

ऋग्वेद के 'रुद्र सूक्त' में गृत्समद ऋषि रुद्र देव को चिकित्सकों में सबसे श्रेष्ठ चिकित्सक के रूप में वर्णित करते हैं और उन्हें कामनाओं की वर्षा करने वाला बतलाते हैं।[8] रुद्र देवता की प्रार्थना करते हुए ऋषि गृत्समद कहते हैं कि 'हे रुद्र! हम तुमको अनुचित प्रकार से किये गये नमस्कारों से क्रोधित न करें। कामनाओं की वर्षा करने वाले हे रुद्र! हम बुरी स्तुतियों द्वारा तुमको क्रोधित न करें और अन्य छोटे देवताओं के साथ तुम्हारा आह्वान करके तुमको क्रोधित न करें। तुम हमारे पुत्र आदि को ओषधियों से संयुक्त करो। हे रुद्र मैं तुमको चिकित्सकों में सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक सुनता हूँ'–

"मा त्वा चुक्रुधामा नमोभिर्

मा दुष्टुती वृषभ मा सहूती।

उन्नो वीराँ अर्पय भेषजेभिर्

भिषक्तमं त्वा भिषजां श्रृणोमि।।"[9]

'मित्र सूक्त' के द्रष्टा ऋषि विश्वामित्र कहते हैं कि 'सूर्यदेव मनुष्यों और प्राणियों को अपने कार्य में प्रवृत्त करता है। अन्नों के उत्पादन के लिए वृष्टि करके मनुष्यों को धारण करने वाले सूर्य देवता का अन्न सब उपासकों द्वारा समान रूप से उपभोग करने के योग्य है। वह पृथ्वी को प्रचुर अन्न से भर देता है। यज्ञों को सम्पादित करता है। दीप्ति आदि गुणों से युक्त देवताओं में और आयु को धारण करने वाले मनुष्यों में कुश काटने आदि कर्मों के द्वारा सूर्य के लिए हवि अर्पित करने वाले व्यक्ति के लिए कल्याणकारी यथेष्ट व्रतों को सिद्ध करने वाले अन्नों को या यज्ञों को सम्पादित करता है।'[10]

इसी प्रकार 'उषस् सूक्त' में महर्षि वामदेव उषा को सूर्य की पुत्री बतलाते हुए उनके उपकारक स्वरूप का वर्णन करते हैं। उनका कहना है कि 'वे प्रसिद्ध उषाएँ उपकार करने वाली हैं। वे कल्याणकारिणी उषाएँ पहले थीं। वे अपने पहुँचने मात्र से धनों को देने वाली हैं। ऋत से उत्पन्न अत एव सत्यभूत हैं। जिन उषाओं के प्रति यज्ञ करने वाला, स्तोत्र या ऋचाओं से प्रार्थना करने वाला, सामगान से स्तुति करने वाला और मन्त्रों का गान करने वाला यजमान धन को शीघ्र प्राप्त कर लेता है'–

"ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुर्-

अभिष्टिद्युम्ना ऋतजातसत्याः।

यास्वीजानः शशमान उक्थैः।

स्तूवञ्छसन्द्रविणं सद्य आप।।"[11]

ऋग्वेद के 'विष्णु सूक्त' में भगवान् विष्णु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि 'विष्णु ने इस दृश्यमान अतिविस्तृत नियमों में बँधे हुए सबके सम्मिलित स्थान लोकत्रय को अकेले ही तीन डगों में नाप लिया था। मधुर, दिव्य अमृत से भरे हुए भगवान् विष्णु के तीन पद कभी क्षीण न होते हुए अन्न के द्वारा सभी को आनन्दित करते हैं'–

"प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म

गिरिक्षिते उरुगायाय वृष्णे।

य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थ-

मेको विममे त्रिभिरित्पदेभि:।।"[12]

ऋग्वेद का 'इन्द्र सूक्त' इन्द्र देव को सर्वगुणसम्पन्न, अत्यन्त पराक्रमी, वृत्रासुर का वध करने वाला, समृद्धिशाली एवं निर्धन सबको सन्तुष्ट करने वाला, सोमरस को निचोड़ने वाला, यजमान की रक्षा करने वाला इत्यादि अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण बतलाया है।[13] इन्द्र सूक्त के द्वितीय मन्त्र में कहा गया है कि 'इन्द्र ने हिलती हुई पृथ्वी को स्थिर कर दिया अर्थात् उन्होंने पृथ्वी को और उस पर रहने वाले प्राणियों को स्थिरता प्रदान की। उन्होंने इच्छानुसार इधर-उधर स्वच्छन्द विचरण करते हुए पङ्खों से युक्त पर्वतों को अपने-अपने स्थान पर नियमित कर दिया। उन्होंने विस्तृत अन्तरिक्ष की रचना की और द्युलोक को थामा हुआ है'-

"य: पृथ्वीं व्यथमानामदृंहत्

य: पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।

यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो

यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्र:।।"[14]

सातवें मन्त्र में इन्द्र के अनुशासनात्मक कार्यों के विषय में बताया गया है कि 'इन्द्र के अनुशासन में घोड़े, गायें, गाँव, रथ इत्यादि रहते हैं। इन्द्र ने सूर्य और उषा को उत्पन्न किया था एवं मेघों से जल लाने का महनीय कार्य किया था।'[15] इसी प्रकार दशवें मन्त्र में कहा गया है कि 'इन्द्र ने अत्यधिक पापपूर्ण कर्म करने वाले और अवज्ञा करने वाले बहुत से लोगों का वध कर दिया था। वे हिंसा करने वाले या चुनौती देने वाले व्यक्तियों को उत्साह से युक्त कर्म नहीं देते और दस्युओं को विनष्ट कर डालते हैं'-

"य: शश्वतो मह्येनो दधाना-

नमन्यमानाञ्छर्वा जघान।

य: शर्धते नानुददाति शृध्यां

यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्र:।।"[16]

अन्तत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ऋग्वेद में ऐसे अनेक सूक्त मिलते हैं, जिनमें परमसत्ता का परोपकारी और व्यावहारिक स्वरूप प्रतिपादित किया गया है। वस्तुत: उपर्युक्त सूक्तों के उदाहरणों में परमसत्ता के जिन व्यावहारिक स्वरूपों का उल्लेख किया गया है, वह इस तथ्य का दृष्टान्त मात्र है। विस्तृत अध्ययन हेतु इस प्रकार के अनेक सूक्तों का परिशीलन आवश्यक है। ऐसे सूक्तों में वरुण सूक्त, पर्जन्य सूक्त, विश्वेदेवा सूक्त, यम सूक्त, वाक् सूक्त, द्यावापृथिवी सूक्त, पुरुष सूक्त, पूषन् सूक्त इत्यादि प्रमुख हैं। इनमें परमसत्ता के जिन व्यावहारिक स्वरूपों का वर्णन मिलता है वह प्राणिमात्र के लिए कल्याणकारी स्वरूप ही है। परमसत्ता के नाम में अन्तर भले दृष्टिगोचर होता है, किन्तु सबके कार्यों का प्रयोजन प्राणिमात्र का हित ही है। यही कारण है कि इन सूक्तों का महत्त्व सदैव से प्रासङ्गिक रहा है, किसी काल-विशेष की सीमा में आबद्ध कदापि नहीं रहा है। आज देश और समाज में जिन मानवीय मूल्यों का ह्रास दिखायी दे रहा है, उनकी प्रासङ्गिकता को ये सूक्त प्रमाणित करते हैं। ऐसे उदात्त मानवीय मूल्यों के विना सुखी और स्वस्थ राष्ट्र की कल्पना असम्भव ही है। इसीलिए परमसत्ता के व्यावहारिक स्वरूपों को हृदयङ्गम करके न केवल आत्मकल्याण, बल्कि सबके उत्थान और कल्याण की भावना से युक्त होकर अपना इहलौकिक जीवन जीते हुए पारलौकिक कल्याण की कामना करनी चाहिए। तभी हमारी "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना भी चरितार्थ हो सकती है। अन्यथा देश और समाज जिस तीव्र गति से विखण्डन की ओर बढ़ रहा है, लोगों में परस्पर द्वेष और हिंसा की भावना प्रबल हो रही है, उसे रोक पाना असम्भव होगा। वैश्विक शान्ति और सद्भाव के लिए तथा प्राकृतिक

पर्यावरण को संजोए रखने के लिए ऋग्वैदिक सूक्तों में वर्णित तथ्यों को आत्मसात् करने की महती आवश्यकता है, तभी आदर्श राष्ट्र की कल्पना साकार हो सकती है। यही इन सूक्तों का भी अभिप्राय है।

सन्दर्भ सूची-

1. ऋग्वेद- 1/1/1
2. वही- 1/1/9
3. वही- 1/35/1
4. वही- 1/35/8
5. वही- 1/35/10,11
6. वही- 1/85/1
7. वही- 1/85/11
8. वही- 2/33/3,4,6,7,12,13
9. वही- 2/33/4
10. वही- 3/59/5,6,7,9
11. वही- 4/51/7
12. वही- 1/154/3
13. वही- 2/12/3,5,6,8,9,11,14
14. वही- 2/12/2
15. वही- 2/12/7
16. वही- 2/12/10